शेख़ फ़रीद – सबद ६९

चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥६६॥

सार: बंधन मज़बूत लग सकते हैं लेकिन वह सतह के नीचे सदा बदलते रहते हैं। लोग, भूमिकायें और आराम जो पहचाने लगते हैं, वह समय के साथ बदल सकते हैं या धुंधले पड़ सकते हैं। हमारा मन इन लगावों से इसलिए बंधा रहता है क्योंकि हम निरंतर बदलती दुनिया में निश्चितता चाहते हैं। पहचान सदा रहने का भ्रम पैदा करती है और जब हम कोई ऐसी चीज़ खो देते हैं जिसके बारे में हमने सोचा था कि वह हमेशा रहेगी तब हमें समझ आता है कि हमने अपनी पहचान को उससे कितनी गहराई से जोड़ा था। समझ हमें आगे बढ़ने और स्वयं को खोजने का अवसर देती है।

चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥
पक्षी एक-एक करके उस तालाब से उड़ गए जहाँ वह कभी बसते थे। उनके जाने की यह तस्वीर स्मरण कराती है कि कैसे वह बंधन के लगाव जो शुरू में आरामदायक और सुरक्षित लगते थे, समाप्त भी हो सकते हैं।

फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥६६॥
फ़रीद कहते हैं कि भरी हुई झील भी आख़िरकार सूख जाएगी और अकेला कमल अंततः थक के मुरझा जाएगा। यह ज़ोर देता है कि न तो बहुतायत और न ही स्थिरता सदा रहती है, हर चीज़ बदलाव और ख़त्म होने के अधीन है। (६६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि खुशहाली और स्थिरता एक ठोस आधार दे सकती हैं लेकिन यह मुखौटा पहन, वह भी ऐसी नश्वरता को दिखाती हैं जिससे लंबे विराम का मौक़ा मिलता है। विलय,

पूरी तरह से अंत होता है जिसका मतलब है कि कोई भी बदलाव आख़िर में ख़त्म होने से बचा नहीं है। जब हम भ्रमों से बंधे रहते हैं तब थकान लगती है और जब यह भ्रम समाप्त हो जाते हैं तब अक्सर अकेलापन इनकी जगह ले लेता है। उन पलों में, हम इस सच्चाई का सामना करते हैं कि आराम की कोई ज़मानत नहीं है। अपनी जागरूकता में स्थिरता और खुशहाली पाने का मौक़ा ही है जो बचता है जहाँ हम नश्वरता को स्वीकार कर लेते हैं, न कि उससे डरते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com